आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां अंक : ग्यारहवां मार्च-2015

4 अमृतवेला

7 परमार्थ (सतसंग)

27 सवाल–जवाब

31 भजन गाने का महत्त्व

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71 (राजस्थान)
098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उप संपादक–नन्दनी

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04
096 67 23 33 04

सहयोग–परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2015 –156– मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले

अमृतवेला

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम करके अपनी भक्ति का दान दिया है। हम भक्ति को खेतों में उगा नहीं सकते, हुकूमत से खरीद नहीं सकते। हम भक्ति को सिर्फ गुरु की दया से ही प्राप्त कर सकते हैं। भक्ति अमोलक हीरा है, उत्तम पदार्थ है। अभी प्रेमी ने बहुत दर्द भरा शब्द बोला है:

मैं मेरी हटौणी पैंदी ऐ, भेटा सिर दी चढ़ौणी पैंदी ऐ,
सिक्ख नाम रखौणा, सौखा ऐ,
ओ सिक्खा सिक्खी दा निभौंणा औखा ऐ

पहलां अंदरों मैल नूं, धोणा पवे,
फिर सोहणे दी याद विच, रोणा पवे,
ठंडा भरना पैंदा, हौंका ऐ,
ओ सिक्खा सिक्खी दा निभौंणा औखा ऐ,

जो प्रेम कमाना चाहता है भक्ति कमाना चाहता है उसके लिए कम से कम फीस सिर कटवाने की है। प्यारेयो! हमने कोई दुनियावी सिर काटकर गुरु के आगे नहीं रखना और न हमारा गुरु इस सिर का भूखा ही है।

जब हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए दोनों आँखों के पीछे एकाग्र करते हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं तब हमारा इस शरीर के साथ ताल्लुक नहीं रहता। सन्त इसे ही सिर कटवाना या सिर भेंट करना कहते हैं। कोई मर-जीवणा प्रेमी ही ऐसा कर सकता है।

बातें करनी तो बहुत आसान है। जो प्रेमी सिमरन और भजन-अभ्यास करते हैं उन्हें पता है कि मन के साथ कितना संघर्ष करना पड़ता है। थोड़े से संघर्ष से ख्याल तीसरे तिल पर इकट्ठा नहीं होता। जब सिमरन करके तीसरे तिल पर पहुँचते हैं तो मन फिर भाग जाता है। कोई मर-जीवणा ही मन के साथ संघर्ष करके जीतता है।

प्यारेयो! प्रेमियों के साथ मिलने पर ही पता लगता है, वे जब आकर कहते हैं कि मुझे मन ने गिरा लिया है। एक गलती ही जिंदगी को खुष्क कर देती है। जब हम छह महीने या साल भर गलतियां करते हैं तो हम किस तरह तीसरे तिल पर एकाग्र हो सकते हैं? अगर जनरल मैदान-ए-जंग में जाते हुए यह कहे कि मेरे साथ लड़ने वाले विरोधियों के हथियार अच्छे हैं वे मजबूत हैं तो क्या हम ऐसे जनरल से फतह की आशा रख सकते हैं, क्या वह देश का वफादार हो सकता है?

इसी तरह अगर शिष्य कहे कि विरोधी ताकतें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बहुत मजबूत हैं अगर ये ताकतें न हों तो मैं फतह पा सकता हूँ। हम रोज-रोज कीचड़ में फँसते हैं तो क्या हम सिर को भेंट चढ़ाने की आशा कर सकते हैं?

प्यारेयो! हमारा मैदान-ए-जंग तीसरा तिल है। सतगुरु ने हमें शब्द-धुन के साथ लेस किया है। सतगुरु यह भी नहीं कहता कि तू अकेला जा बल्कि वह हमेशा हमारे साथ है लेकिन लड़ना तो जनरल का ही काम होता है। शिष्य ने आगे मजबूत होकर खड़े होना है गुरु उसकी पीठ पर है। एक जनरल मैदान-ए-जंग में अपने मालिक का हुक्म मानकर जाता है तो उसकी जरूरत का सामान पहुँचाना हेडक्वाटर वालों का काम होता है।

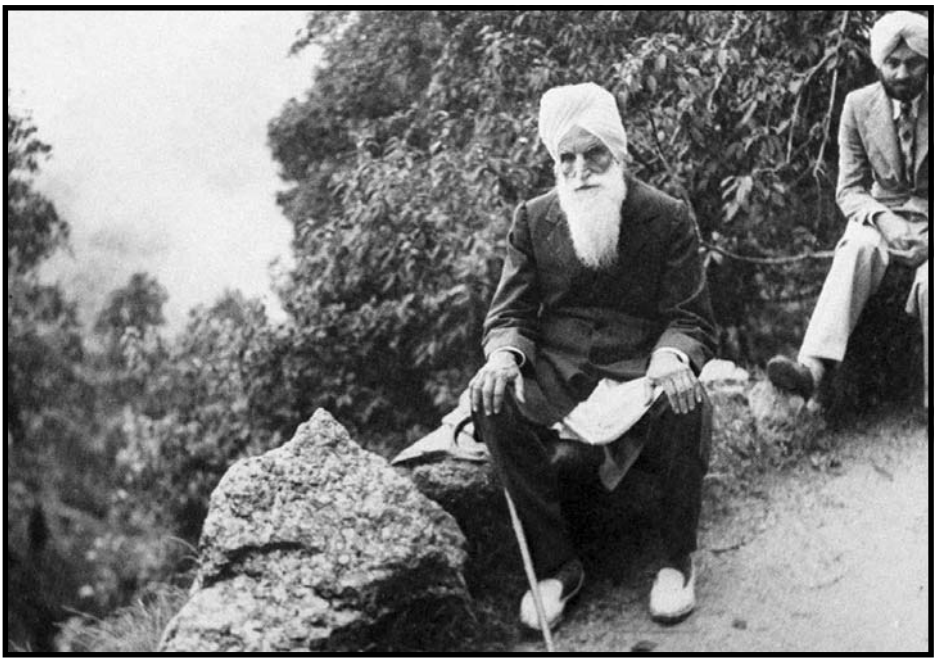

प्यारे बच्चों! गुरु सिर्फ देह नहीं होता। वह हमें सिर्फ पांच अक्षर ही नहीं बताता। जब वह देह में बैठा है तो हमारे अंदर उत्साह और तड़प पैदा करता है। हमारे खतरनाक दुश्मन हमारी रूहानी पूंजी लूटते हैं गुरु हमें उनसे सावधान करता है। जब हम उसकी शिक्षा पर पूरी तरह अमल करके तीसरे तिल पर जाते हैं, सूक्ष्म देश में जाते हैं तो वह सूक्ष्म रूप धारण करता है। जब हम कारण देश में जाते हैं तो वह कारण रूप धारण करता है। जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तो वहाँ सार-शब्द है।

जिस तरह अंदर तरक्की करते जाते हैं सतगुरु वही स्वरूप धारण करके हमारी मदद करता है, वह हर वक्त हमारे साथ है। सच तो यह है कि वह परछाई की तरह अंदर एक सैकिंड भी सेवक से दूर नहीं होता। आँखे बंद करके अपना सिमरन शुरू करें।

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमार्थ

फरीद साहब की बानी

मुम्बई

यह फुलवाड़ी करण-कारण कुलमालिक सावन की है, आप हमें हमेशा जातिय तर्जुबे बताते थे। सभी सन्तों की जिंदगी जातिय तर्जुबे से भरी होती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''सन्तों से वही लोग फायदा उठा सकते हैं जो उनके कहने पर विश्वास करके उनके कहे अनुसार चलते हैं। बेशक बाहरी तौर पर हमें नुकसान ही नजर आता है लेकिन इसके पीछे बहुत कुछ छिपा होता है।''

महाराज सावन सिंह जी बताया करते थे कि हर आदमी परमार्थ की बातें तो करता है लेकिन **परमार्थ** बातों का विषय नहीं, कमाई की वस्तु है। आप एक बूढ़ी औरत की मिसाल दिया करते थे कि उसकी लड़की बीमार हो गई। वह बूढ़ी हमेशा ही परमात्मा के आगे फरियाद करती कि मैंने संसार में बहुत कुछ देख लिया है मौत मुझे आ जाए, यह लड़की ठीक हो जाए।

मालिक घट-घट में बैठा है, वह कभी देख भी लेता है कि जीव क्या करते हैं? एक दिन उनके घर में एक गाय आ गई और इधर-उधर देखने लगी। वहाँ एक देग पड़ी थी जो चूल्हे पर चढ़-चढ़कर नीचे से काली हो चुकी थी। गाय ने कुछ खाने के लिए उस देग में मुँह डाला तो उसका मुँह देग में फँस गया। अब न तो गाय का मुँह दिखाई दे रहा था और न ही उसके सींग दिखाई दे रहे थे।

गाय घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगी। बूढ़ी औरत ने सोचा! मैं जिस फरिश्ते को रोज याद करती थी शायद! यह वही है। बूढ़ी औरत ने घबराकर कहा, ''बीमार लड़की आगे पड़ी है मैं तो बूढ़ी

हूँ।'' हम जीव **परमार्थ** की बातें तो जरूर करते हैं लेकिन उन पर चलने के लिए नहीं सोचते इसलिए हम फेल हो जाते हैं।

स्यालकोट में एक मुसलमान फकीर हमजागोश रहा करता था। वह अच्छा जपी-तपी और रिद्धि-सिद्धि वाला था। वहाँ एक साहूकार भी रहता था। जिसके पास बहुत धन-पदार्थ था लेकिन उसका कोई बच्चा नहीं था। हम लोग बच्चे के बिना घर को सूना समझते हैं। उस साहूकार ने हमजागोश फकीर की अच्छी सेवा की। फकीर ने कहा, ''तुम्हारे घर चार लड़के होंगे लेकिन तुम उनमें से परमार्थ के लिए एक लड़का मुझे दे देना।''

हम लोग समझते हैं कि फकीरों के कहने से कुछ नहीं होता ये ऐसे ही बातें करते हैं। ऐसा नहीं यह तो अपनी-अपनी श्रद्धा पर निर्भर करता है। कुछ समय बाद साहूकार के घर चार लड़के पैदा हुए, लड़के बड़े हो गए लेकिन साहूकार ने हमजागोश फकीर को **परमार्थ** के लिए एक लड़का नहीं दिया। आखिर उस फकीर ने साहूकार को बुलाकर कहा कि तुमने जो वायदा किया था उसे पूरा करो, एक लड़का मुझे दो। साहूकार काफी साल बात को टालता रहा आखिर एक दिन कहने लगा, ''हम हिन्दू हैं आप मुसलमान हैं अगर मैं आपको अपना लड़का दूंगा तो लोग मेरी निंदा करेंगे।''

रिद्धि-सिद्धि वाले फकीर बड़ी जल्दी बद्दुआ दे देते हैं। उस फकीर ने कहा कि ये सारा ही गाँव झूठे आदमियों का है। जब तक यह गाँव बर्बाद नहीं हो जाएगा मैं तब तक अन्न-पानी नहीं खाऊंगा।

जब गुरु नानकदेव जी संसार में आए उस समय रिद्धि-सिद्धि वाले बहुत फकीर हुआ करते थे। गुरु नानकदेव जी ने ऐसे फकीरों को सीधे रास्ते पर डाला। गुरु नानकदेव जी बाला और मर्दाना को

लेकर स्यालकोट गए। गुरु नानकदेव जी ने हमजागोश से कहा कि फकीरों के अंदर दया होनी चाहिए। हमजागोश ने कहा, ''मैं तभी अन्न-पानी खाऊँगा जब यह सारा गाँव गर्क हो जाएगा।''

गुरु नानकदेव जी ने कहा कि इस गाँव के लोगों ने तो पहले ही मरना कबूल किया हुआ है, तू मेरे हुओं को क्यों मारना चाहता है? हमजागोश ने कहा, ''मुझे तसल्ली कैसे होगी?'' उसकी तसल्ली कराने के लिए गुरु नानकदेव जी ने मर्दाना को दो सिक्के देकर कहा, ''तू शहर से सच और झूठ का सौदा खरीदकर ला।'' मर्दाना घूमता-घूमता एक व्यापारी मूला खत्री के पास पहुँचा। मूला खत्री ने सोने के दो सिक्के लेकर एक कागज पर लिखकर दे दिया कि मरना सच है और जीना झूठ है।

मर्दाना वह कागज लेकर गुरु नानकदेव जी के पास आया। गुरु नानकदेव जी ने वह कागज हमजागोश को दिखाया और कहा, ''देख सज्जना! इस शहर में ऐसे इंसान हैं जो ये समझते हैं कि मरना सच है और जीना झूठ है। इन्होंने तो पहले ही मरना कबूल किया हुआ है; तू इन्हें क्या मारेगा?''

गुरु नानकदेव जी ने सोचा! मूला खत्री ने कलाम तो बहुत ऊँचा लिखकर दिया है। चलो देखते हैं क्या वह खुद इस बात पर अमल करता है? गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''प्यारेया! तूने जो लिखा है अगर तू इन बातों पर चलता है तो हम तेरे चरण चूमने के लिए तैयार हैं।'' मूला ने कहा, ''मैंने तो पैसों के लिए झूठ बोला है, अब आपके बनते हैं अगर आप हमें समझा सकें।''

मूला खत्री ने कुछ दिन गुरु नानकदेव जी की बहुत सेवा की। जब गुरु नानकदेव जी स्यालकोट से चलने लगे तब आपने मूला

खत्री से कहा, ''हम तुझे अपना प्रतिनिधि बना देते हैं जो **परमार्थ** का अभिलाषी आएगा तू उसे नाम दे देना, हम उसकी संभाल करेंगे।'' मूला खत्री ने कहा कि मैं आपके बिना नहीं रह सकता। आप मेरा दीन-ईमान बन गए हैं।

गुरु नानकदेव जी ने कहा कि तेरी पत्नी है तेरे बच्चे हैं तुझे घर पर रहकर अपनी जिम्मेवारी को पूरा करना चाहिए। मूला खत्री ने कहा कि मैंने सब अच्छी तरह से देख लिया है मैं आपके बिना नहीं रह सकता। वह आपके साथ चल पड़ा।

जब एक मंजिल आगे गए तो गुरु नानकदेव जी मूला खत्री से कहा कि तेरी घरवाली के हाथ में नारियल है और वह आग में जलने के लिए तैयार है अगर तू जल्दी पहुँच सकता है तो पहुँच जा। जिसके साथ तेरी विरोधता थी जिसे तू सज्जन समझता था उसने ही यह बात तेरी घरवाली को सिखाई है। बस! इतने में ही मूला सतगुरु के प्यार को भूल गया और कहने लगा, ''मुझे जल्दी घर पहुँचाओ मेरी घरवाली तो मेरा दीन-ईमान है।'' वह घर आकर अपनी घरवाली के पास बैठ गया।

कुछ देर बाद गुरु नानकदेव जी बाला और मर्दाना को साथ लेकर मूला के पीछे गए। उन्होंने मकान के नीचे खड़े होकर आवाज दी, ''मूलया! बाहर आ।'' उसकी पत्नी ने ऊपर से देखकर कहा कि वो तीनों फकीर तुझे लेने के लिए आ गए हैं। मूला ने कहा कि अब मैं क्या करूं? वे मुझे ले जाएंगे। उसकी पत्नी ने कहा कि तू बाहर जाकर छिप जा मैं कह दूंगी कि वह तो आपके साथ ही गया था। वापिस ही नहीं आया।

जब फिर गुरु नानकदेव जी ने आवाज लगाई तो मूला की पत्नी ने बाहर आकर उसी तरह कह दिया। गांव के लोग भी इकट्ठे

हो गए। गांव के लोगों ने कहा कि हमने थोड़ी देर पहले मूला को यहीं देखा था। उस समय गुरु नानकदेव जी ने ये शब्द उचारा:

नाल कड़ेयारा दोस्ती, कूड़ो कूड़ी पाए।
मरन न जाणें मूलया आया कित्थे खाए।।

अरे मूला! तू हमारे साथ ठग्गी मारता है तुझे तो यह भी नहीं पता कि तूने कहाँ मरना है? वहाँ साँप निकला उसने मूले को डस लिया। यह बात सारे गाँव में फैल गई कि मूला सन्तों से डरता हुआ घर आया उसे साँप ने डस लिया मौत ने नहीं छोड़ा फिर मूला खरगोश की योनि में आया।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज दक्षिण में गए। वहाँ उन्होंने उस खरगोश का शिकार किया। जब उनका बाज खरगोश को खा रहा था उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज हँस रहे थे। आज उनकी याद में वहाँ गुरुद्वारा भी बना हुआ है। वहाँ एक वैष्णव ख्यालों का आदमी आया उसे किसी ने बताया कि यह पूरे गुरु हैं इनसे नाम ले तेरा फायदा होगा लेकिन उस आदमी के दिल में अभाव आया कि यह कैसे गुरु हैं इनका बाज जिन्दा जानवर को खा रहा है और यह हँस रहे हैं।

यह सब सन्तों की मौज होती है। गुरु साहब ने उस प्रेमी से कहा कि तुझे इस राज़ का ज्ञान नहीं। यह खरगोश हमारे बड़े गुरुओं का सेवक था, इसे सहने की आदत थी इसलिए यह खरगोश की योनि में आया। ऐसी कहानियां इसलिए प्रचलित होती हैं क्योंकि सन्त-महात्मा आने वाले लोगों को बताने के लिए लिख जाते हैं।

इसी तरह सावन सिंह जी महाराज एक दिन संगत को बड़े प्यार से समझा रहे थे कि गुरु गोबिंद सिंह जी का दीवान लगा हुआ था। गुरु गोबिंद सिंह जी सेवक के बारे में बता रहे थे कि गुरु

का सेवक कोई विरला ही होता है। आमतौर पर कोई औरत का सेवक होता है कोई बच्चे का सेवक होता है कोई धन-दौलत का सेवक होता है। इतने में एक सेवक ने उठकर कहा, ''महाराज जी! मैं तो आपका सेवक हूँ।'' गुरु महाराज जी ने उसे समझाया लेकिन वह नहीं माना। आखिर गुरु महाराज ने कहा कि हमारे लिए ऐसे कपड़े का थान लेकर आ जैसा सारे शहर में न मिले।

वह सेवक ऐसा ही एक थान खरीदकर घर लाया। वह दिल में सोच रहा था कि मेरे पास बहुत धन है मैं ऐसे बहुत थान लेकर जा सकता हूँ। उसकी घरवाली ने कपड़े का वह थान देखकर पूछा कि तू ये थान किसके लिए लाया है? सेवक ने कहा कि मैं यह थान गुरु साहब के लिए खरीदकर लाया हूँ। उसकी घरवाली ने कहा कि यह थान तो मुझे पसंद है। सेवक ने उसे समझाया कि ऐसा और थान बाजार में नहीं है मैं तुझे दूसरा थान ला दूंगा लेकिन उसकी घरवाली नहीं मानी।

उसकी घरवाली ने कहा, ''मुझे यह थान पसंद है, यह थान मुझे चाहिए। तू गुरु साहब से कह देना कि मुझे अभी ऐसा थान नहीं मिला मैं अभी खोज रहा हूँ।'' सेवक ने कहा कि मैं उन्हें यह कैसे कहूँ वह तो अंर्तयामी हैं।

वह सेवक गुरु साहब के पास गया। गुरु साहब ने उससे पूछा, ''क्या तू कपड़ा लाया है?'' सेवक टाल-मटोल करने लगा कि मैं कोशिश कर रहा हूँ, अभी मुझे ऐसा कपड़ा नहीं मिला। पीछे-पीछे उसकी घरवाली बगल में कपड़े का थान लेकर वहाँ आ गई। उसने थान निकालकर गुरु महाराज के आगे रखकर कहा, ''महाराज जी! यह आपका नहीं मेरा सेवक है।''

श्रृंगी ऋषि जंगल में पैदा हुआ, सारी जिंदगी जंगल में ही रहा कभी शहर में नहीं आया लेकिन जब मन से मुकाबला करना पड़ा अंदर काम की लहर उठी तो उसने तेरह बच्चे पैदा किए।

महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हम सबके जीवन में ऐसी घटनाएं घटती हैं। हमारे पाठी जी भी अपने एक प्यारे की बहुत तारीफ किया करते थे कि हम पच्चीस-छब्बीस साल से इकट्ठे रह रहे हैं हममें तो बहुत कमियां हैं लेकिन यह प्रेमी बहुत हठी और मजबूत इरादे का है। इसे भक्ति करने का मौका मिले तो यह कर सकता है। यह नामदान लेने से पहले भी कई बार घर छोड़कर जा चुका है पाठी जी उसे वापिस लेकर आते थे।

उस प्रेमी ने मुझे तेरह साल तक मजबूर किया कि मैं आपके पास रहना चाहता हूं आप ही मेरे सब कुछ हैं। आखिर मेरे दिल में मेरे गुरुदेव ने सोचा कि इसे परमार्थ में लगाया जाए। मैंने उससे कहा कि तू अपने बच्चों की जिम्मेवारी पूरी कर ले फिर सोचेंगे। मेरे गुरुदेव कृपाल ने उसकी चार लड़कियों और दो लड़को की जिम्मेवारी उठाई, सब काम पूरा कर दिया फिर उसने कहा, ''मैं आपके पास रहना चाहता हूँ।''

मैंने उसे फिर समझाया कि तू अपने घर में रहकर अपनी पत्नी और बच्चों से प्यार कर। वह कहने लगा, ''मैं तो आपके बिना रह ही नहीं सकता।'' एक दिन उसके बच्चे और पत्नी उसे मेरे पास छोड़ने आए कि अब यह भक्ति करे हमें बहुत खुशी होगी।

वह कुछ दिन तो यहाँ रहा। मालिक सबको तर्जुबा करवा देता है। उसकी पत्नी ने सोचा देखें तो सही यह कितने पानी में है? जब उसकी पत्नी ने प्रेम-प्यार वाली आँखे दिखाई तो वह उदास हो

गया। जैसे श्रृंगी और पारासुर ऋषि भी पिघल गए थे। पाठी ने मुझसे कहा कि आप इसे छुट्टी दे दें, यह किसी और तरफ न चला जाए। मैंने उसे एक मोटर साईकिल वाले आदमी के साथ भेजा कि इसे इसके घर तक छोड़कर आना है। कबीर साहब कहते हैंः

कबीरा ऐह मन मशकरा, कहूँ तो माने रोश।
जे पेंडे साहिब मिले, तबही न चले कोश।।

यह मन हर एक के साथ मशकरी करता है। हम ऋषियों-मुनियों की कहानियां सुनते हैं लेकिन यह हमारे खुद के साथ भी बीत जाती है। वह घर तो चला गया लेकिन घर जाकर भी उसे अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि उसके मन का एक हिस्सा यह भी कह रहा था कि तूने ठीक नहीं किया। वह घर में जाकर ऐसा मुँह बनाकर बैठ गया जैसे पहाड़ पर चोर पकड़ा जाता है; उसे भागने के लिए कहीं जगह नहीं मिलती।

यह जीव खांड खाना चाहता है लेकिन नीम के पौधे को पानी दे रहा है। पाठी जी ने मेहरबानी की उसे जाकर फिर ले आए, उसने मुझसे कहा, ''ये सब मेरे बस की बात नहीं मेरी औरत मेरे साथ बहुत प्यार करती है।'' मैंने कहा, ''मैं तीस साल से देख रहा हूँ कि तुम दोनों एक-दूसरे की शक्ल देखकर खुश नहीं अगर यह औरत तुझसे प्यार करती है तो बुरा किसे समझती है।''

मैंने उससे कहा, ''प्यारेया! अब अच्छी तरह सोच ले। मेरे गुरुदेव ने बारह-चौदह दिन बैठकर सोचा था कि क्या कारोबार करना चाहिए? आखिर आपने यही कहा कि भगवान पहले और दुनिया के काम बाद में।''

मैंने अपनी भी हिस्ट्री बताई कि मुझे घर छोड़ने में तीन साल लग गए थे। मैंने बहुत बारीकी के साथ सोचा कि घर छोड़कर क्या-

क्या तकलीफें आएंगी? अगर हम भक्ति कर भी लेते हैं तब भी मन पीछा नहीं छोड़ता। यह इन्द्रियों के जरिए अपने हथियार हमारे आस-पास डाल देता है। एक बार मैदान-ए-जंग में पैर रखकर पीछे हटना अच्छा नहीं। कबीर साहब कहते हैंः

जे गृह करे तां धर्म कर नहीं ता कर वैराग।
वैरागी होय बंधन पड़े ताके बड़ो अभाग।।

फरीद साहब की एक पठान के साथ दोस्ती थी। जब फरीद साहब तप-अभ्यास करने लगे तो उस पठान ने सोचा कि अब इनके साथ अपना खाना-दाना तो समाप्त हो गया है क्यों न इन्हें किसी और तरीके से भरमाया जाए! काल भी एक बहुत बड़ी शक्ति है। जब इससे मुकाबला करना पड़ता है यह हमें फेल कर देता है। काल ने पठान के अंदर बैठकर उसे सलाह दी कि आज फरीद साहब को खाने पर बुलाया जाए। पठान ने खाने के साथ अच्छे नाच गाने का भी इंतजाम किया कि जब फरीद यह देखेगा तो उसका मन पिघल जाएगा लेकिन फरीद साहब तो अंदर से नाम के साथ जुड़ चुके थे। यह देखकर फरीद साहब ने कहाः

ऐ विस गंदलां धरीआं खंड लिवाड़।
इक राहें दे रह गए इक राधी गए उजाड़।।

देख पठान! तू जो औरतें नचा रहा है ये सब गंद से भरी हुई हैं। ये जहर की गंदले हैं इनके ऊपर खांड चढ़ी हुई है। मेरा जो धर्म था मैंने तुझे बता दिया है। काल ने जीवों को फँसाने के लिए इंसानों के ऊपर पोचा फेरा हुआ है लेकिन इनके अंदर जहर भरा हुआ है। जो इन्हें खाएगा वह खत्म हो जाएगा। जब रामचन्द्र के गुरुदेव उन्हें शिक्षा देने लगे तो उन्होंने यही कहाः

थैला ऐह गंदगी दुर्गन्धी स्थान।
बिष्टा ही इसमें भरा और न कुछ भी जान।।

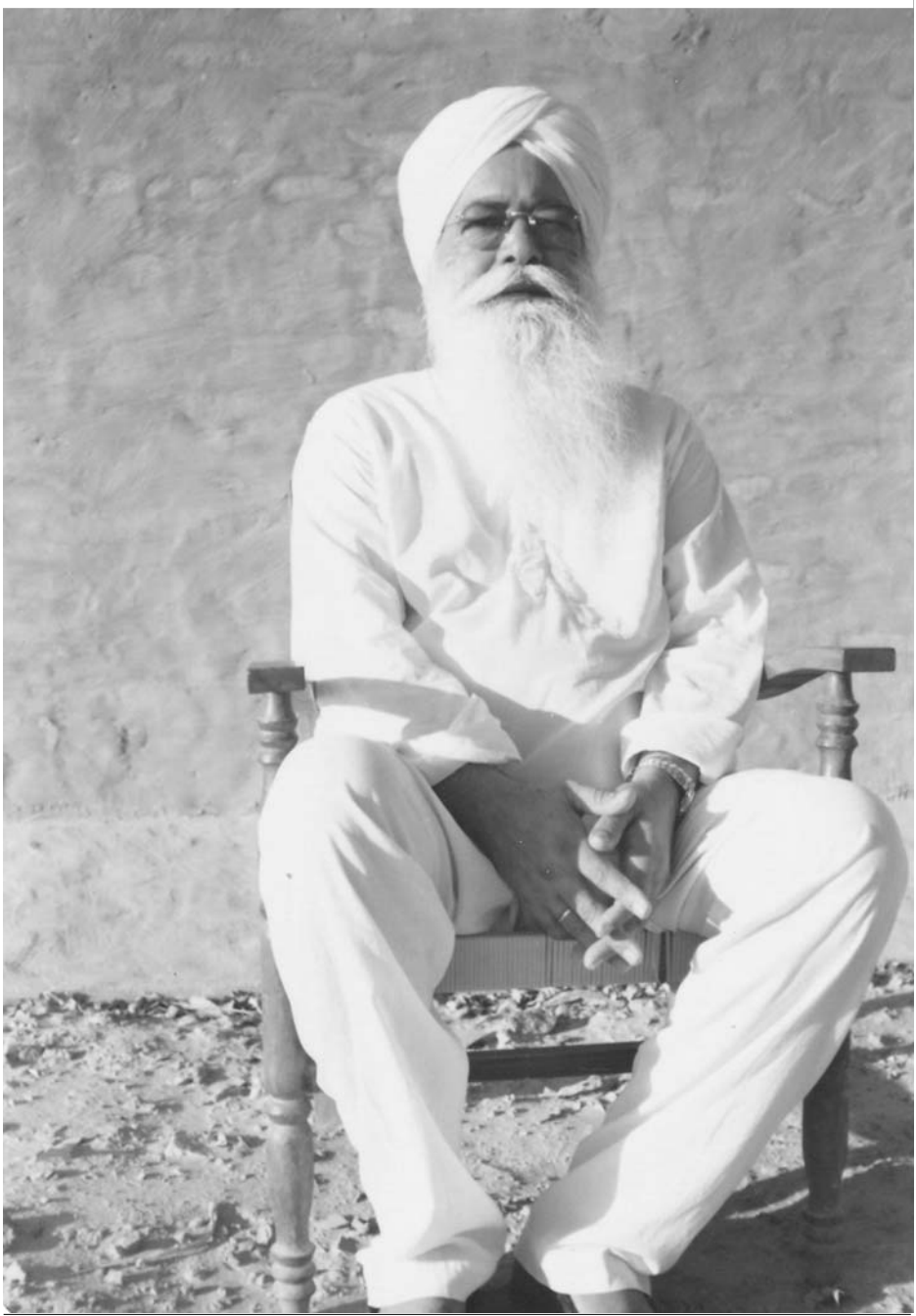

चाहे औरत है चाहे मर्द है सबको एक जैसी इन्द्रियां लगी हुई हैं। इन इन्द्रियों में से एक जैसी ही वस्तुएं निकलती हैं। आँख, नाक और कान से मैल निकलती है इसी तरह नीचे की इन्द्रियां भी मैल से भरी हुई हैं तू इनसे बचकर रहना, इनमें फँस न जाना।

फरीदा ए विस गंदलां धरीआं खंड लिवाड़।।
इक राहेंदे रह गए इक राधी गए उजाड़।।
फरीदा चार गवाया हंढ कै चार गवाया संम।।
लेखा रब मंगेसीआ तू आंहो केह्रे कंम।।

फरीद साहब कहते हैं, ''देख प्यारेया! कोई सगाई करके छोड़ जाता है तो कोई शादी करके छोड़ जाता है। किसी की पत्नी चली जाती है तो किसी का पति चला जाता है। अफसोस! से कहना पड़ता है कि तूने चार प्रहर दुनिया के धंधो में बिता दिए, चार प्रहर सोकर बिता दिए लेकिन जब परमात्मा साँस-साँस का लेखा लेगा तो उस समय क्या जवाब देगा कभी परमात्मा को याद किया, भजन किया? तू दिन-रात बुराईयां करता है, बुराईयां ही सोचता है।''

फरीदा दर दरवाजै जाय कै क्यों डिठो घड़ीआल।।
एह निदोसां मारीऐ हम दोसां दा क्या हाल।।

आप एक दिन राजदरबार में गए। वहाँ आमतौर पर जगह-जगह घंटे रखे होते हैं। वह घंटा पीतल का हो या लोहे का हो उस पर हर आधे घंटे बाद मार पड़ती है, दोपहर के बाद तो काफी मार पड़ती है इन्होंने क्या कसूर किया है लेकिन हम तो कसूरों से भरे हुए हैं। हमने तो इतने पाप-ऐब किए हुए हैं हमारा उस दरगाह में क्या हाल होगा? इस घंटे की तरह दोषों से भरे हुए जीवों का भी आगे चलकर यही हाल होता है, वहाँ यम इसे पीटते हैं।

घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाय।।
सो हेड़ा घड़ीआल ज्यों डुखी रैण विहाय।।
बुड्ढा होआ सेख फरीद कंबण लग्गी देह।।
जे सौ वरयां जीवणा भी तन होसी खेह।।

एक काँपते हुए बुर्जुग ने फरीद साहब के पास जाकर कहा कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ कोई दवाई बताएं मैं जवान हो जाऊँ। उस समय सर्दी का मौसम भी नहीं था वह बिना सर्दी के ही काँप रहा था। हम जानते हैं कि बूढ़े आदमी की देह काँपने लग जाती है, यह उसके बस की बात नहीं होती लेकिन मन फिर भी अंदर से कहता है कि तेरी उम्र लंबी हो जाए, तुझे जवानी वापिस मिल जाए। हम जानते हैं कि एक बार जवानी हाथ से गई तो बुढ़ापा आ जाता है।

फरीद साहब उस बुर्जुग से कहते हैं, ''देख प्यारेया! अब तेरा समय आ गया है तेरी देह काँप रही है अगर तुझे और भी सौ बरस की उम्र मिल जाए तो भी आखिर में तेरा तन कब्र में जाकर मिट्टी में मिल जाना है।''

फरीदा बार पराइऐ बेसणा सांई मुझै न देह।।
जे तू एवैं रखसी जीउ सरीरों लेह।।

फरीद साहब उस बूढ़े को संबोधन करते हुए अपने गुरु के आगे फरियाद करते हैं कि हे गुरु परमात्मा! तू मुझे पराए दरवाजे में न बिठा अगर तूने मुझे ऐसे ही जन्म-मरण में लगाए रखना है तो इससे बेहतर है कि तू मेरे तन में से इस जीव आत्मा को निकाल ले ताकि मेरा शरीर छूट जाए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जो घर छड गवावणा सो लग्गा मन माहे।
जित्थे जाए वुध वरतना तिसकी चिंता नाहे।।

महात्मा प्यार से कहते हैं कि हमने यहाँ से एक दिन बिस्तर झाड़कर चले जाना है। हमारे दिल में यह घर समाया हुआ है लेकिन हमने जिस घर जाना है उसकी चिंता नहीं।

कंध कुहाड़ा सिर घड़ा वण कै सर लोहार।।
फरीदा हौं लोड़ी सौह आपणा तू लोड़ह अंगयार।।

जस्सा लुहार फरीद साहब का दोस्त था। वह आमतौर पर फरीद साहब के तप स्थान से लकड़ियां काटकर लाता था। एक दिन उसके सिर पर पानी का मटका और कंधे पर लकड़ियां काटने वाला कुहाड़ा रखा हुआ था। फरीद साहब बैठकर तप करते-करते थक गए तो पेड़ के साथ खड़े होकर अभ्यास करने लगे ताकि नींद न आ जाए। तप करते-करते उनका शरीर भी लकड़ी की तरह दुबला हो गया था।

जस्सा लुहार को कम नजर आता था। उसने फरीद साहब को पेड़ की लकड़ी समझकर कुहाड़े का दस्ता मारकर देखा क्या लकड़ी ठीक है? ऐसा करने से फरीद साहब की समाधि खुल गई। फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया! तेरे सिर पर घड़ा और कंधे पर कुहाड़ा है। मैं परमात्मा की बंदगी कर रहा हूँ उससे मिलना चाहता हूँ और तू मेरे ऊपर अंगयार करना चाहता है, तू मेरा कैसा दोस्त है?''

फरीदा इकना आटा अगला इकना नाहीं लोण।।
अग्गै गए सिर चोटां खासी कौण।।

अब फरीद साहब जस्सा लुहार से कहते हैं, ''किसी के पास बहुत सारा आटा है और किसी के पास सब्जी में डालने के लिए नमक भी नहीं है। कोई तो बहुत ज्यादा अभ्यास करके अपनी पूंजी जमा कर लेते हैं और कईयों के पास नमक जितना भी अभ्यास

नहीं है, वे आगे जाकर क्या खाएंगे? आगे परमात्मा ने लेखा मांगना है वहाँ कौन मार खाएंगा? हम जानते हैं कि जब पुलिस वाले चोर के साथ बुरा व्यवहार करते हैं तो वहाँ उसका कोई दर्दी नहीं होता। तू रोज मेरे पास आता है तू जप-तप कर, खुदा को क्या जवाब देगा?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जह लेखा कर समझाया।।

आप कहते हैं, ''वहाँ जीव को लेखा करके समझाया जाता है कि यह तेरा ही किया हुआ है, अब तू इसे भुगत।''

पास दमामे छत सिर भेरी सडो रड।।
जाय सुत्ते जीराण मह थीए अतीमा गड।।

आप एक राजा की मौत को देखकर कहते हैं कि एक राजा मर गया सब महल-माड़ीआ उसी तरह छोड़ गया। उसे एक यतीम की तरह कब्र में रख दिया। ऐसा भी समय था जब राजा के दरवाजे पर भट्ट लोग ढ़ोल और बाजे बजाते थे। अब कोई तूती नहीं बज रही बाजा नहीं बज रहा महल सूना हो गया है।

मैं पंजाब में देखता रहा हूँ कि राजाओं के दरवाजे पर शाम को दो-तीन घंटे भट्ट लोग बाजे बजाकर राजाओं का मनोरंजन करते और राजाओं से अच्छी तनख्वाह लेते थे।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआं उसारेदे भी गए।।
कूड़ा सौदा कर गए गोरीं आय पए।।

फरीद साहब बड़े प्यार से कहते हैं कि आज इन ऊँची-ऊँची महल-माड़ियों को बनाने वाले नहीं रहे। जो इनमे बस रहे हैं आज इन्हें अपना-अपना कह रहे हैं वे भी नहीं रहेंगे। इनका अहंकार करना कूड़ सौदा है, सबने चार दिन भोग-भोगकर चले जाना है।

सन्त हमें परमात्मा से जोड़ने के लिए आते हैं, दुनिया की जायदादों से जोड़ने के लिए नहीं आते। जब इस शरीर ने ही साथ नहीं जाना तो क्या हम धन-दौलत साथ ले जाएंगे? महाराज जी कहा करते थे, ''यह शरीर भी पराया है किराए का मकान है।''

वेद-व्यास औरत का रूप धारण करके जेमिनी ऋषि की परिक्षा लेने के लिए रात को गए। जेमिनी ऋषि ने कहा कि कुटिया मेरी है तू कब्जा करके बैठी है दरवाजा खोल। तब वेद-व्यास जी ने जेमिनी ऋषि से कहा कि तूने इतनी अच्छी किताब लिखी है लेकिन अफसोस आज तक इस धरती और माया का कोई मालिक बना है?

महात्मा समझाते हैं कि इन चीज़ों का कोई खसम-खसाई नहीं होता। हमारे बड़े-बुर्जुग इनकी उल्टियां करके छोड़ गए हैं, हम इन्हें चाटने में लगे हुए हैं। इस धन-दौलत, महल-माड़ीयों ने हमारे बुर्जुगों का साथ नहीं दिया तो हम क्या उम्मीद लगाए बैठे हैं!

फरीदा खिंथड़ मेखां अगलीआं जिंद न काई मेख।।
वारी आपो आपणी चले मसायक सेख।।

एक फकीर जंगल में अपनी गुदड़ी सिल रहा था। उसका विचार था कि फटे पुराने कपड़े पहनने से परमात्मा मिलता है। फरीद साहब उस फकीर से कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू गुदड़ी को टांके लगा रहा है क्या कभी इस जिंद को भी कोई मेख लगाई है, इस देह में बैठकर कभी भजन-सिमरन किया है? यहाँ पर न कोई रिद्धि-सिद्धि वाला रहता है न कोई कलाबाजी करने वाला रहता है सबने इस संसार से चले जाना है।''

फरीदा दोंह् दीवीं बलंदयां मलक बहिठा आय।।
गढ़ लीता घट लुट्टया दीवड़े गया बुझाय।।

उस गुदड़ी वाले फकीर ने सवाल किया क्या यह सच है कि काल देखते-देखते ही ले जाएगा या वह चोरी से आकर मारता है? फरीद साहब ने कहा, ''प्यारेया! उस समय चंद्रमा और सूरज के दोनों दीपक जलते होंगे, तेरी दोनों आँखों के सामने मौत का फरिश्ता आ जाएगा इस शरीर पर कब्जा कर लेगा और दोनों आँखों को बुझा जाएगा फिर ये आँखें संसार को नहीं देख सकेंगी। वह छिपता नहीं क्योंकि उसे किसी का डर नहीं।''

फरीदा वेख कपाहै जे थीआ जे सिर थीआ तिलाह।।
कमादै अर कागदै कुंने कोयलिआह्।।

महात्माओं की आँखें खुली होती हैं। उन्हें अनेक जन्मों का ज्ञान होता है कि हम किस जन्म में क्या थे, हम कैसे पशु-पक्षियों के जामें में आए, हमने कितनी पत्नियां और कितने पति बनाएं। उस फकीर ने फिर सवाल किया, ''क्या परमात्मा के दरबार में कष्ट होता है?''

आप उस फकीर से कहते हैं, ''तू आँखों से इस संसार को देखता है कि ईख भी जानदार है उसकी हालत देख! जमींदार पहले उसे काटता है फिर छीलता है फिर बेलन में डालता है; उसे कितना कष्ट होता है? उसके बाद ईख के फोग को भी आग में डालकर जलाया जाता है, वह कैसे उबाले खाता है, मीठा बनने के लिए उसे कितना कष्ट सहना पड़ता है? हो सकता है किसी समय में वह भी अच्छा इंसान हो।''

इसी तरह कपड़ा बनने के लिए रूई को कितनी भूख प्यास सहनी पड़ती है फिर उसे कातने के लिए मशीनों में डाला जाता है धुनाई की चोटे खाता है आखिर दर्जी के पास जाकर कटाई सहता है। हो सकता है वह भी कभी अच्छी आत्मा हो!

घड़े की हालत देखें! घड़ा बनने के लिए उसे कितनी तकलीफें सहनी पड़ती हैं। पहले कुम्हार मिट्टी गूथता है उसे चक्क पर चढ़ाता है उसे रस्सी से काटता है फिर आग का सेक देकर पकाता है। सब चीजें जानदार हैं सबको ज्ञान है लेकिन हम सोचते हैं कि ये चीज़ें ऐसे ही बनी हुई हैं। जब हम अंदर जाते हैं तो हमें ज्ञान होता है। जिन्होंने परमात्मा की भक्ति नहीं की इंसानी जामें की कीमत नहीं समझी उनकी यह हालत हुई।

जब मैं बाबा बिशनदास जी को महाराज सावन सिंह जी के पास लेकर गया तब उनके साथ फत्ती फकीर भी था। फत्ती फकीर भी उसी गांव का था जहाँ बाबा बिशनदास रहते थे। फत्ती फकीर अंदर जाता था। जब महाराज सावन सिंह जी से बात हुई तो फत्ती फकीर ने बैठे-बैठे कहा कि आपका एक जामा राजा फरीदकोट का भी हुआ है। महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा कि मैंने कई जामों में कड़ाके की गरीबी भी देखी है अगर आज मैं उन महलों पर दावा करूं तो क्या वे मुझे उन महलों में घुसने देंगे? महात्माओं को बहुत तर्जुबा होता है वे अपने आपको छिपाकर रखते हैं।

मंदे अमल करेंदया ऐह सजाय तिनाह।।

आप कहते हैं कि कोयले की क्या हालत होती है? पहले कोयले को जलाया जाता है फिर उस पर पानी डालकर बुझाया जाता है, इस तरह कोयले को कितना कष्ट सहना पड़ता है। जिस तरह हाथ जल जाए उसके ऊपर पानी डालें तो कितना कष्ट होता है। इस संसार में जो जीव भजन-सिमरन नहीं करते ऐब-पाप करते हैं वे जीव ऐसे जामों में आकर ऐसी सजाएं भुगतते हैं।

फरीदा कंन मुसल्ला सूफ गल दिल काती गुड़ वात।।
बाहर दिसै चानणा दिल अंधिआरी रात।।

एक पाखंडी साधु ज्ञान-ध्यान की बातें करता था। फरीद साहब ने उससे कहा कि तूने अभ्यास करने वाला कपड़ा कंधे पर रखा हुआ है लोगों को काटने के लिए दिल में कैंची है। मुँह से मीठी बातें करता है बाहर तुझे लाईट नज़र आ रही है लेकिन तेरे दिल में अंधेरा है।

दो आदमी झूठ बोलने में बहुत माहिर थे। उन्होंने सलाह बनाई कि किस तरह दुनिया को लूटकर खाया जा सकता है? उन्होंने आपस में सलाह की कि हम एक-दूसरे की झूठी बात को सच बना दिया करेंगे। तू मेरा गवाह और मैं तेरा गवाह। वे दोनों राजा के पास गए। उन्होंने राजा के पास जाकर कहा कि हम दोनों बड़े परमार्थी हैं, हमें त्रिलोकी तक दिखाई देता है। पहले हम शिकार खेला करते थे।

राजा ने उनसे कहा कि कोई करतब करके दिखाओ कि आपने शिकार में क्या मारा? उनमें से एक ने कहा कि यह दूसरा आदमी शिकार में बहुत माहिर है। इसने एक दिन हिरन को तीर मारा एक ही तीर से हिरन का पैर, कान और सींग तीनों में छेद कर दिए। राजा ने कहा, ''यह तो बिल्कुल झूठ है। पैर कहाँ कान कहाँ और सींग कहाँ?'' उसने कहा यह बहुत बड़ा निशानेबाज है। जब इसने तीर मारा उस समय हिरन अपने पैर से कान पर खारिश कर रहा था। पैर, कान और सींग तीनों एक जगह पर थे। बेशक यह झूठ था लेकिन उन्होंने इसे सच बना दिया।

फिर राजा ने दूसरे आदमी से पूछा तो उसने कहा कि एक दिन पेड़ पर कबूतर बैठा था मैंने कबूतर को गुलेल मारी तो वह कबूतर भुनकर नीचे गिर पड़ा। राजा ने कहा, ''ऐसा कैसे हो सकता है कि गुलेल मारने से कबूतर का कबाब बन गया उसे आग

पर चढ़ाना ही नहीं पड़ा।'' दूसरे आदमी ने कहा महाराज! कबूतर ने पत्थर खाए हुए थे जब उसे गुलेल लगा तब पत्थरों की रगड़ से आग पैदा हो गई और कबूतर भुनकर नीचे आ गया।

यह भी सफेद झूठ था लेकिन वे झूठ बोलने में माहिर थे। उन्होंने इस झूठ को भी सच बना दिया। पल्टू साहब कहते हैंः

जिसके साथ दस-बीस हैं उसका नाम महंत।

ऐसे लोग मिलकर पार्टी बना लेते हैं उनके साथ हलवा-पूरी खाने वाले ही होते है; वे ऐसे ही झूठ को सच बना देते हैं कि इस महात्मा को बहुत कुछ दिखता है, आँखें बंद करे त्रिलोकी तक दिखाई देता है। यह बहुत परमार्थी है।

गुरु नानकदेव जी कुरुक्षेत्र में गए वहाँ एक आदमी कभी आँखें खोलता तो कभी आँखें बंद करता था। आपने बाला, मर्दाना से कहा कि यह बिल्कुल पाखंडी है। उस आदमी ने अपने आगे माया का लोटा रखा हुआ था आँखें खोलकर देख लेता था कि इसमें कितनी माया हो गई। आँखें इसलिए बंद कर लेता था कि लोग समझें बाबा समाधि लगाकर बैठा है। लोग उसकी बहुत तारीफ करते थे कि इसे त्रिलोकी तक दिखाई देता है।

गुरु नानकदेव जी ने बाला से कहा कि तू इसका लोटा उठाकर इसके पीछे रख दे और खुद उसके आगे हाथ जोड़कर बैठ गए। जब उसने आँख खोली तो उसके गुस्से की कोई हद न रही। वह गुरु नानकदेव जी के गले पड़ गया कि आपने मेरा पैसों वाला लोटा उठाया है। गुरु नानकदेव जी ने हँसकर कहाः

काल नाहीं जोग नाहीं, नाहीं सत के ढब।
मगर पीछे कछु न दिसे, सुई ते तिन लोए।।

आपने कहा कि तू लोगों को ठगने के लिए कहता है कि तुझे त्रिलोकी तक दिखाई देता है। क्या तुझे अपने योग से पीछे पड़ा हुआ लोटा दिखाई नहीं दे रहा? वह शर्मिन्दा हुआ।

सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे हमें समझाते हैं कि हम मुँह से मीठी-मीठी बातें करते हैं और हाथ में लोगों को काटने के लिए कैंची पकड़ी हुई है। हम हर नाजायज काम करने के लिए तैयार रहते हैं। दिल के अंदर रात है बाहर लाईट दिखती है। हम बाहर से दुनिया को धोखा दे सकते हैं लेकिन परमात्मा अंदर बैठा है बाहर धोखा नहीं खाता।

परमात्मा कृपाल कहा करते थे, ''बेशक परमात्मा ऊँचा है सच भी ऊँचा है लेकिन सच्चा आचरण रखना इससे भी ऊँचा है।'' फरीद साहब कहते हैं, ''हम सच्चे-सुच्चे बनें। शब्द-नाम की कमाई करें ताकि परमात्मा हमारी सच्चाई देखकर दरवाजा खोले।''

***

DVD - 82

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी:- *क्या आप गुरु की दया के बारे में कुछ बताएंगे?*

बाबा जी:- सन्तमत में गुरु की दया के बारे में ही बताया जाता है। आप जब सतसंग में बैठते हैं और अभ्यास में बैठने से पहले भी जो थोड़ा बहुत बोला जाता है उस समय अपने मन को हाजिर रखें और समझने की कोशिश करें। कई प्रेमी जब दर्शनों के समय आते हैं तो कहते हैं कि सतसंगों में बहुत कुछ बोला गया है अब सिर्फ दर्शन करने के लिए आए हैं। जो प्रेमी सतसंग में अपने मन को हाजिर नहीं रखते वही प्रेमी ऐसी बातें पूछते हैं।

मैं गुरु की दया के बारे में हमेशा ही बताया करता हूँ कि गुरु बिना मुआवजे के हमारा नौकर होता है। वह हमारा ऐसा नौकर है जो हमारी सेवा करते हुए न ऊबता है न कभी थकता है और न हमारे जिम्में कोई अहसान ही करता है; वह अपना फर्ज पूरा करता है। वह हमारे आंगन को साफ करने के लिए झाड़ू लगाते हुए हमसे कोई आशा नहीं रखता। कई बार मैल को खुरचकर भी निकाला जाता है लेकिन जब वह मैल खुरचनी शुरू करता है तो सेवक चीं-चीं भी करता है कि मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? हांलाकि सन्त दया का अंग नहीं छोड़ते।

आमतौर पर सन्त सेवक को वचन से ही समझाते हैं। सतसंग में सन्त एक ही लफ्ज़ को बार-बार समझाते हैं। बातें तो वही तीन चार हैं कि सिमरन करना, शब्द को सुनना और अपने घर पहुँचना है। सन्त कभी किसी ढ़ग से तो कभी किसी ढ़ग से समझाते हैं कि कोई शब्द तो इनके दिल को प्यारा लगेगा, इनके मन को पलटेगा!

तुलसी साहब कहते हैं, ''सन्त सच्चखंड से सेवक के लिए मेवा लेकर आते हैं। बहुत से लोग उस मेवे के खरीददार बनकर आते हैं लेकिन जब सन्त उस मेवे का मूल्य बताते हैं तो कोई नजदीक नहीं आता कहते हैं कि ये बहुत महंगा माल बेचते हैं।'' सन्त कहते हैं क्या तू सिर देने के लिए तैयार है? सच पूछो तो सन्त न किसी का तन लेते हैं न धन लेते हैं न किसी का सिर लेते हैं बल्कि सन्त तो सदा की जिंदगी देने के लिए ही आते हैं।

सन्तों की सबसे बड़ी दया यह है कि वे हमें सतसंग के जरिए अंदर लेकर जाते हैं। जो आत्मा अंदर जाती है उसे पता है कि सतगुरु अंदर निचले मंडलों में सतसंग सुनाता है और शब्द के साथ जोड़ता है। पहले हम सिमरन के जरिए उसके दायरे में जाते हैं आगे गुरु शब्द-रूप में मिलता है, वह इसे शब्द के साथ जोड़ता है; सतसंग सुनाता है और अंदर के मंडलों के बारे में बताता है कि किस मंडल से जाना है, किस मंडल से नहीं जाना।

हमारे बुजुर्ग हमें परियों की कहानियां सुनाया करते थे। ये सब अंदर के मंडलों की बाते हैं आज भी जो अभ्यासी स्वर्गों में से जाते हैं उन्हें पता है कि वहाँ सब चीजें मौजूद होती हैं लेकिन जब नर्कों के मंडल आते हैं तो वे वहाँ भी देखते हैं कि किस तरह जीव चीख-पुकार कर रहे हैं उन्हें सजा मिल रही हैं। आज दुनिया में आलम कहीं विरले ही हैं बातें करने वाले बहुत हैं।

हम सन्तों को भी ऐसी कहानियां कह देते हैं कि परमात्मा तो डरपोक लोगों के लिए है, परमात्मा है ही नहीं। सन्त कहते हैं कि परमात्मा है लेकिन परमात्मा को देखने वाली हमारी आँखें नहीं हैं। हम इस बाहरी संसार में भी समझ सकते हैं कि कौन सी ताकत मौत-पैदाईश करती है? कौन सी ताकत है जिसके आसरे

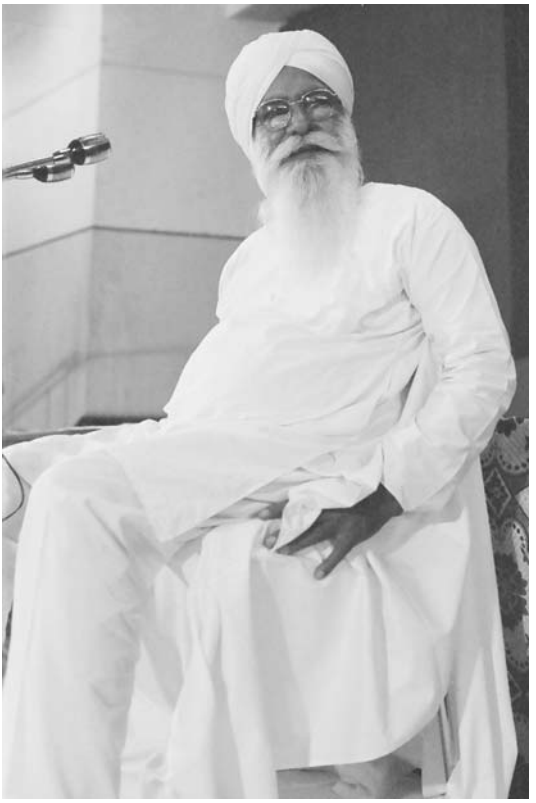

सूरज चढ़ता और छिपता है? वह कौन सा धुरा है जिसके चारो तरफ धरती घूम रही है? वह कौन सी ताकत है जिसके आसरे नींद आती है फिर इंसान जाग जाता है?

सन्त कहते हैं इतनी बड़ी दुनिया बनाकर परमात्मा ने इसे सूना नहीं छोड़ा हुआ, कोई इसे बनाने और चलाने वाला भी है। इसे आप कुदरत भगवान किसी भी नाम से याद कर लें। किसका दिल करता है कि मैं बीमार होकर परेशान होता फिरुं! किसका दिल करता है कि मैं लूला-लंगड़ा होकर धक्के खाता फिरुं! वे भी इंसान हैं जो रूलते-फिरते हैं, बीमारी का हिसाब चुकाते हैं। किसी के शरीर से पस बह रही है कोई उसे अपने नजदीक खड़ा नहीं

होने देता। ऐसे भी इंसान हैं जो अच्छे महलों में रहते हैं। इस रचना के पीछे कोई गुप्त ताकत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

आपे भांडे साजयन आपे पूर्ण करे।
इक निहाली पे सबन ईक ऊपर रहण खड़े।
ईक नी दुध समाईऐ ईक चूल्हे रहण चढ़े।
तिन्हां सँवारे नानका जिनको नदर करे।।

परमात्मा आप ही शरीरों को बनाता है और आप ही इसमें अपनी आत्मा रखता है। परमात्मा दया करके सबसे पहले हमें संगत में लाता है गुरु के पास लाता है। गुर दया करके हमें अनमोल हीरा 'नाम' का भेद देता है, अंदर के मंडलों में हमारी अगुवाही करके आगे परमात्मा के दरबार में लेकर जाता है। गुरु की दया बयान नहीं की जा सकती। गुरु नानक साहब कहते हैं:

सतगुरु दया का रूप है, जिसनूं दया दया सदा होए।

गुरु की दया लफ्जों में बयान नहीं की जा सकती। जिसे दया का एक तिनका भी मिल जाता है वह दिल में गद्-गद् हो उठता है।

मैं आशा करता हूँ कि सारे प्रेमी थोड़ी सी हिम्मत करें। सन्त कोई लम्बा वायदा नहीं करते। जब हम भूले हुए जीव तैयार नहीं होते तो सन्त हमें कहानियों में चिह्न बताते हैं। सन्त कहते हैं कि आओ चलो! सच्चाई को खुद आँखों से देखो।

महाराज कृपाल कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक इंसान करता है वह काम दूसरा भी कर सकता है।'' मैं हमेशा कहा करता हूँ प्यारेयो! यह बातों का मजबून नहीं करनी का मजबून है। मैंने खुद अपनी जिंदगी में किया है। मुझे पता है कि सन्त सच्चाई दिखाने के लिए ही आते हैं लेकिन हम भूले हुए जीव उस सच्चाई को देखने के लिए तैयार नहीं होते। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा

भजन गाने का महत्त्व

मेरा कागज गुनाह वाला पाड़ दे।

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपनी याद में बैठने का और अपना यश करने का मौका दिया है। इतिहास बताता है कि सन्तों का बच्चों के साथ बहुत लगाव होता है क्योंकि बच्चे भोली आत्माएं होती हैं इनके ऊपर इतनी मैल नहीं चढ़ी होती। हम जैसे-जैसे बड़े होते हैं अपने ऊपर ज्यादा मैल चढ़ा लेते हैं।

मुझे दो हस्तियों के चरणों में बैठने का मौका मिला है, यह उन्हीं की दया थी। महाराज जी कहा करते थे, ''अंधे की ताकत नहीं कि सुजाखे को पकड़ ले, जब तक सुजाखा दया करके अपनी अंगुली अंधे के हाथ में न पकड़ा दे।'' इन दोनों हस्तियों को बच्चों के साथ बहुत लगाव था। जो काम माता-पिता नहीं कर सकते जैसे अंदर ख्याल को इकट्ठा करना या गुरु के दर्शन करना; बच्चे गुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं। आपको ऐसे बहुत से छोटे बच्चे मिल जाएंगे जो गुरु से सीधे ही संदेश ले लेते हैं।

महाराज जी कहा करते थे कि रूहानियत में तरक्की करने के लिए चालीस दिन के बच्चे जैसा बनना पड़ता है; एम. ए. पास को अनपढ़ बनना पड़ता है। बच्चा स्कूल में दाखिल होता है तो उसे पता नहीं होता कि मेरे टीचर में क्या गुण है, यह मुझे क्या बताएगा? या जो बताएगा उसके कितने फायदे हैं?

आप जानते हैं कि टीचर बच्चे की मदद करता है लेकिन पेपर तो बच्चे ने ही करना होता है। जो बच्चा ज्यादा मेहनत करता है वह

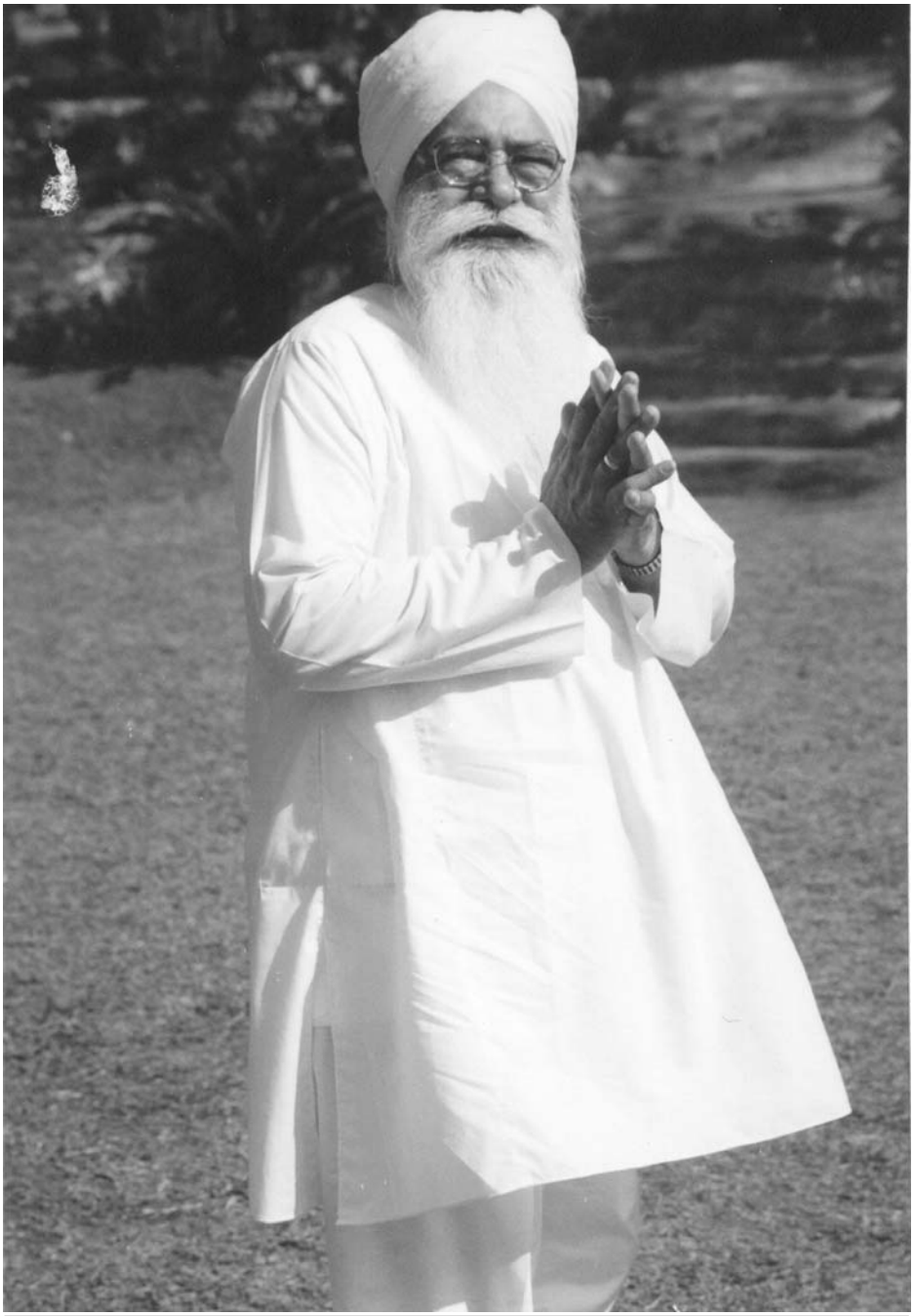

टीचर के ध्यान का ज्यादा हकदार होता है। यही कारण है कि हर बच्चे के एक जैसे पेपर नहीं होते, हर एक को एक जैसे नम्बर नहीं मिलते। यह हर बच्चे की अपनी मेहनत और लगन के ऊपर है, अध्यापक तो सबको एक ही लगन से पढ़ाता है।

सन्तमत में भी यही चीज लागू है कि सेवक जितनी ज्यादा लगन से मेहनत करता है वह गुरु की दया का ज्यादा हकदार हो जाता है। गुरु तो सबके ऊपर एक जैसी दया करता है, सबको एक जैसी तवज्जो देता है लेकिन तवज्जो को ग्रहण करने वाले शिष्य जल्दी तरक्की कर लेते हैं। हम मेहनत के चोर हैं आलसी हैं। हम अपनी मंजिल को जितना लम्बा कर रहे हैं हम उतना ही सुख शान्ति और अपने घर से दूर हो रहे हैं।

प्यारेयो! रास्ता बताने वाले ने हम पर दया की हमें सही और सीधा रास्ता बता दिया और उसने यह भी वायदा किया कि मैं तेरे साथ चलता हूँ लेकिन मंजिल पर पहुँचने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। सन्तों ने हम पर दया की यह आत्मा-राजकुमारी अपने घर को भूल चुकी थी इस राजकुमारी को अपने घर का रास्ता बता दिया। जो अंदर जाते हैं उन्हें पता है कि गुरु हर मंजिल पर साथ होता है लेकिन रास्ता तो आत्मा को खुद ही तय करना पड़ता है।

हाँ भाई! आज बच्चे पहले भजन बोलेंगे। कुछ सचमुच के बच्चे हैं कुछ बच्चे बने हुए हैं, हमें दोनों ही प्यारे हैं। बच्चे जैसा मन बनाना आसान नहीं होता।

***

धन्य अजायब

दिल्ली में मई प्रोग्राम

16 पी.एस. आश्रम में अगले सतसंग का कार्यक्रमः

31 मार्च, 1 अप्रैल व 2 अप्रैल 2015